सशस्त्र दुनिया में गाँधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता

*डॉ. राजकुमार बैरवा

सारांश –

परमाणु हथियारों की होड, क्षेत्रीय संघर्ष, आतंकवाद और साइबर युद्ध जैसी चुनौतियाँ विश्व शांति के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है। विश्व के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष जारी है। रक्षा बजट में वृद्धि और सैन्य गठबंधनों का विस्तार यह दर्शाता है कि दुनिया अधिक सशस्त्र होती जा रही है। इससे न केवल मानव जीवन खतरे में पड़ता है, बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास भी प्रभावित होता है। आतंकवाद और आतंरिक संघर्ष भी बडी चुनौती है। हिंसा का यह चक्र समाज में भय और अस्थिरता पैदा करता है। ऐसे में केवल सैन्य शक्ति से इन समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में गाँधीवादी सिद्धांत मानवता के लिए एक नैतिक दिशा प्रदान करते है। अहिंसा, सत्य और सत्याग्रह जैसे सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि राष्ट्रीय और अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर भी शांति और स्थिरता स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। गाँधीवादी विचारधारा हमें यह सिखाती है कि सच्ची शक्ति हिंसा में नहीं, बल्कि संयम, सहिष्णुता और सत्य में निहित होती है। यदि हम एक शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण विश्व की कल्पना करते हैं, तो गाँधीवादी सिद्धांतो को अपनाना अनिवार्य है।

कुन्जी शब्द – सत्याग्रह, वैश्विक संघर्ष, नैतिक नेतृत्व, अहिंसात्मक प्रतिरोध, वैश्विक शांति, सतत विकास, आतंकवाद, परमाणु हथियार, मानवतावाद।

प्रस्तावना– आज का वैश्विक परिदृश्य लगातार बदलरहा है। जहां शक्ति संतुलन, सैन्य प्रतिस्पर्द्धा और तकनीकी युद्ध की प्रकृतियाँ तेजी से बढ़ रही है। महात्मा गाँधी के जीवन काल और उसके बाद से दुनिया ने दो विश्व युद्धों और अन्य क्षेत्रीय और द्विपक्षीय सशस्त्र संघर्षों को देखा है, जिसमें लाखों लोग मारे गये हैं। जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर परमाणु बमों के उपयोग के विनाशकारी परिणामों और वर्तमान में राष्ट्रों के बीच चल रहे असंतुलन ने दुनिया के विवेक को सशस्त्र विकल्प के लिए एक अहिंसक विकल्प की अनिवार्यता के लिए जागृत किया है। अहिंसा और सत्य की लौ जिसे वर्धा में महात्मा गाँधी ने प्रज्वलित किया उसे अभी तक उच्च तकनीक, आधुनिकता और विज्ञान के इस युग ने बुझाया नहीं है, बल्कि दुनिया के नेताओं को आशा की किरण और वैकल्पिक समाधान दिखाये है, जो परमाणु के अंगारे और धुएं में डूब रहे हैं, उन्हे अधिक रोशन और शानदार दिख रहा है।

यह अहिंसा की एक मानसिक स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण का एक बहुत कठिन पाठ्यक्रम लेता है। यह एक अनुशासित जीवन है, एक सैनिक के जीवन की तरह। पूर्ण अवस्था तभी पहुंचता है जब मन, शरीर और वाणी उचित समन्वय में होते हैं। यदि हम सत्य और अहिंसा को जीवन का नियम बनाने के लिए दृढ संकल्पित हो तो हर समस्या का समाधान स्वयं करना होगा। (युवा भारत, 10 अक्टूबर, 1931).

प्रेम और अहिंसा का उद्देश्य जीवन का नियम, ब्रहमांड का कानून और मानवता का कानून है। यह जाति, धर्म, आस्था, नस्ल और क्षेत्रों की सीमाओं को एक साथ रखकर घृणा, हिंसा और युद्ध की ताकतों के प्रति संवेदनशील नहीं होने के लिए पूरे मानवता को एकजुट करने के लिए मार्गदर्शकके रूप में होगा। विश्व राजनीतिक

घटनाओं का अंतिम संस्कार और उदासी हर इंसान के भीतर की आवाज को जोरदार ढंग से प्रकट करता है और वह यह है कि सत्य और अहिंसा की आवाज है, जो दुनिया के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

क्रूर ताकतों का सहारा लेकर राष्ट्रों की समस्याओं को हल किया गया है। हालांकि शक्तिशाली और खतरनाक परमाणु हथियार सभी समस्याओं को हल नहीं कर सकते है। महात्मा कहते हैं कि मानवता को पीड़ित करने वाली कई समस्याओं को शांतिपूर्ण और अहिंसक द्वारा हल किया गया है। इतिहास, प्रेम और सेवा की दिन–प्रतिदिन की घटनाओं को दर्ज नहीं करता है, यह केवल संघर्षों और झगड़े की तुलना में इस दुनिया में प्यार और सेवा बहुत अधिक आम है। (गाँव और कस्बे) (आश्रम बहनों के लिए बापू के पत्र, 1961: 113)।

विवादों को निपटाने में प्रेम और अहिंसा के बिना दुनिया एक जंगल जैसी होगी। प्रेम और अहिंसा का नियम् दुनिया को एकजुट करने के लिए जारी की जाने वाली प्रत्येक आत्मा में घृणा, शत्रुता, नस्ल, जातीयता, धर्म और क्षेत्र के आधार पर विखंडित होने से रोकने की असीम भावना रखता है। प्रेम और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन नहीं करना सभी भाईयों और बहनों को जीवन में नहीं बल्कि मृत्यु में बदल देगा। जब घृणा, युद्ध, संघर्ष और हत्या की गंभीर ध्वनियाँ पहले से ही पूरे विश्व में शांति के लिए रो रही है, तो महात्मा की प्रेम और अहिंसा की आवाज आखिरी उम्मीद प्रदान करती है। गाँधी की अहिंसक आवाज मनुष्य के सर्वोच्च विवेक की अपील करती है। गाँधीजी ने रक्तपात के माध्यम से स्वतंत्रता और स्वतंत्रता की मांग के विचार का विरोध किया था। महात्मा ने लिखा है– मैं खुद को राष्ट्रवादी कहता हूँ, लेकिन मेरा राष्ट्रवाद ब्रहमांड की तरह व्यापक है। इसमें पृथ्वी के सभी देशों को शामिल किया गया है। मेरे राष्ट्रवाद में पूरी दुनिया की भलाई शामिल है। मैं नहीं चाहता कि मेरा भारत दूसरे देशों की राख पर उठे। मैं नहीं चाहता हूँ कि भारत एक भी इंसान का शोषण करे। मैं चाहता हूँकि भारत मजबूत हो ताकि वह अन्य देशों को भी अपनी ताकत से सयंमित कर सके। आज यूरोप में एक भी राष्ट्र के साथ ऐसा नहीं है, वे दूसरों को ताकत नहीं देते।

गाँधीजी एक वैश्विक आइकन हैं क्योंकि उन्होंने कुछ मौलिक विचारों को व्यक्त किया, प्रयोग किया और लागू किया जिसमें मानव समाज के लिए सार्वभौमिक अपील है, जो समय और स्थान में कटौती करते हैं। मानवता का सामना बेरहम हिंसा, बढ़ती सामाजिक अव्यवस्था, आतंकवाद, स्वार्थी व्यक्तिगत, उपभोक्तावाद, असहिष्णुता और पर्यावरणीय गिरावट की गंभीर चुनौतियों से होता है। इन चुनौतियों की गंभीरता पर जोर देने की जरूरत नहीं है। वैश्विक आतंकवाद दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक नए रूपों और परिष्कार को प्रदर्शित करता है। नस्लीय भेदभाव और सामाजिक हिंसा ने इस वर्ष भी अमेरिका और यूरोप जैसे सबसे आधुनिक समाजों में फिर से फैलाया है। पर्यावरणविद् और वैज्ञानिक बार–बार जलवायु परिवर्तन के संकट से जूझ रहे हैं। इन चुनौतियों की गंभीरता पर जोर देने की जरूरत नहीं है लेकिन जब इन चुनौतियों के लिए**"वैज्ञानिक और तकनीकी समाधान"** खोजने की कोशिश करते हैं, तो हमारी सीमा बार–बार उजागर होती है। गाँधीवादी विश्व दृष्टि ने उनके मूल विचारों के बारे में व्यक्त किया जैसे कि उपभोक्तावाद और जीवन के भौतिकवादी दृष्टिकोण, मानव के नियंत्रण के आधार पर सरल जीवन के दलील, मानव और मातृ पृथ्वी को एक–दूसरे के पूरक के रूप में व्यवहार करना आदि आदर्श के लिए दार्शनिक नींव प्रदान करते है, सतत विकास के। गाँधीवादी विश्व दृष्टि तीन स्तरों पर संतुलन द्वारा स्थिरता की तलाश करती है– मानव आत्मा के विभिन्न तत्वों के बीच संतुलन, मनुष्य और अन्य मनुष्यों के बीच संतुलन और अंत में मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन। पश्चिम के विकास मॉडल में मनुष्य सार्वजनिक रूप से उत्साही होने के बजाय स्वयं चिंतित है, ज्ञान के बिना तर्कसंगत प्रदर्शित करता है, संतुलन और समायोजन के बजाय नियंत्रण चाहता है और समय विकास के बजाय भौतिक विकास को आगे बढ़ाता है। स्पष्ट रूप से इंसान और विकास का यह दृष्टिकोण टिकाऊ नहीं है।

दूसरी ओर गाँधीजी का संपूर्ण जीवन के सभी पहलुओं में प्रयोग स्थिरता है। गाँधी जी को मानव संकाय के सुधार पर गहरा विश्वास है और उनके स्थायी समाधान हमेशा मनुष्य के सुधार और सुधार की संभावना के इर्द–गिर्द घूमते हैं। उनका मानना है कि मातृ प्रकृति के पास हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन है, लेकिन हमारे लालच को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। जैसा कि हमारे समय के संकट के वैज्ञानिक और अन्य अस्थायी गैर–मानवीय समाधानों ने अपनी सीमा का प्रदर्शन किया है, गाँधीवादी विश्व दृष्टि एकमात्र विकल्प के रूप में उभरती है।

गाँधीवादी नैतिकता धर्म और धार्मिक प्रथाओं की अपनी गहरी समझके साथ शुरू होती है। गाँधी के लिए धर्म कभी संप्रदायवाद नहीं रहा है क्योंकि इसका उपयोग समकालीन दुनिया में किया जा रहा है। धर्म के विकास और विकास के इतिहास में किसी भी समय की तुलना में धर्म विचार किया गया गाँधीवाद आज अधिक प्रासंगिक है। गाँधी के लिए सत्य एक नैतिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण घटक था। गाँधी ने ईश्वर को सत्य की बराबरीकी और अपने धर्म को सत्य के धर्म के रूप में नामित किया। गाँधी ने कहा, ''खुशी ही कुंजी सच्चाई की पूजा में निहित है, जो सभी चीजों का दाता है।'' यह उद्देश्य और विनम्रताकी दृढ़ता के साथ अभ्यास किया जाना चाहिए। गाँधी के अनुसार''इसमें घमंड की कोई गुंजाइश नहीं है और इस तक पहुंचने का एकमात्र साधन अहिंसा ही है।''

गाँधीवादी आर्थिक नैतिकता बहुत प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि देश की समकालीन आर्थिक प्रणाली में वास्तविक समस्याएं है और साथ ही दुनिया भी। उन्होंने मानव जाति को चेतावनी दी कि प्रकृति आपको आपकी जरूरत के लिए पर्याप्त देती है लेकिन आपने लालच के लिए नहीं। नैतिकता की प्रधानता गाँधी केपूरे जीवन पर हावी रही। उन्होंने सभी का नैतिक विकास किया और इसके माध्यम से उनका आध्यात्मिक विकास किया। गाँधीवादी नैतिकता व्यक्तिगत, समाज और संस्थानों के लिए समान रूप से प्रासंगिक थी। गाँधी के नैतिक मानक को बहुत ही उच्च भावना और मजबूत दिल के व्यक्ति द्वारा व्यवहार में लाया जा सकता है इसे व्यवहार में लाने के लिए बलिदान के साथ प्रतिबद्धता, समर्पण और समझदारी की जरूरत है। गाँधीवादी विचार और नैतिक मानक जो उन्होंने और निर्धारित किए हैं वे सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शांति, समृद्धि और स्वतंत्रता के रास्ते हैं।

गांधीवादी अर्थशास्त्र प्रकृतिवादी समाजवादी था–ग्रामीण सशक्तीकरणबुनाई और हस्तशिल्प जैसे ग्रामीण उद्योगों के संरक्षण और आत्मनिर्भरता पर जोर देने पर केंद्रित था। दुनिया की अधिकांश समस्याओं के कारण में असमानता की बड़ी भूमिका होती है चाहें वह सामाजिक, सांस्कृतिक या आर्थिक स्तर की हो। समाज में आर्थिक विषमता अति औद्योगिकरण, पूँजीवाद तथा आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण का नतीजा था। गाँधीजी का न्यासिता का सिद्धांत पूँजीपतियों और जमीदारों के ह्रदय परिवर्तन की कामना का था। इसमें पूँजीपति, पूँजी के मालिकानास्वामित्व से मानसिक संतुष्टि प्राप्त कर सकते है परंतु उस सम्पति को सम्पूर्ण समाज के उपभोग के लिए रखने की बात करते हैं।

भारत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के नक्शेकदम पर चलते हुए एक वैश्विक नेता के रूप में अपना नाम बना रहा है। गाँधीजी के स्वराज, स्वावलंबी या आत्मनिर्भरता, बुनियादी शिक्षा, सर्वोदय या सार्वभौमिक उत्थान, अहिंसा या अहिंसा के सिद्धांत, स्वच्छता के सिद्धांत – ये सभी आधुनिक भारत और दुनियाभर के देशों के आधार बने हुए है। भारत अपने नाभिकीय हथियारों के प्रथम प्रयोग न करने की नीति का प्रयोग करते हुए अपने सभी पड़ोसियों के लिए पूर्वनीति के साथ, गाँधी के अहिंसा और भाईचारा नीति के सिद्धांतों का पालन करता है। भारत अपनी मेक इन इण्डियानीति के साथ भी दुनिया में अग्रणी रहा है, जो गाँधी की स्वावलंबी अवधारणा पर आधारित है। संयुक्तराष्ट्र सहित विश्व ने सतत विकास के गाँधीवादी विचारको अपनाया है। गाँधीवादी आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों को सभी जलवायु समझौतों, पर्यावरण संरक्षण संधियों औरसंयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के लिए प्रेरक

बल के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

वैश्वीकरण के इस युग में जब एकसीमाहीन दुनिया का विचार हमारे दिमाग में आता है, यह संचार और सूचना के क्षेत्र में क्रांति के माध्यम से क्षेत्रीय सीमाओं को हटाने का एक भौतिक साधन मात्र नहीं है। यह मानव मन में शक्तिशाली विचार होना चाहिए कि गाँधी ब्रह्मांड के साथ परस्पर जुड़े हुए थे और सभी केसाथ मिलकर प्रेम, अहिंसा और सत्य के अनन्त सूत्र के साथ बुना गया था। यह वसुधैव कुटुम्बकम की उनकी सच्ची अवधारणा थी जो प्रेम, अहिंसा और सत्य के पत्थरों पर दृढतर से बनी थी। अहिंसा और सत्य में आसन्न प्रेम के सिद्धांत का पालन करते हुए ईश्वर की शक्ति को सख्ती से जारी करके मानव दुनिया में शांति कायम कर सकता है।

हालांकि गांधीवादी सिद्धांत आदर्शवादी माने जाते हैं, परंतु कुछ आलोचक इन्हें व्यावहारिक नहीं मानते विशेषकर आतंकवाद और आक्रमक राजनीति के संदर्भ में। फिर भी यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि दीर्घकालिक शांति और स्थिरता के लिए अहिंसा और नैतिकता हीस्थायी समाधान प्रदान कर सकते हैं। निष्कर्षतः, गांधीवादी सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने स्वतंत्रता संग्राम के समय थे । बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में इन सिद्धांतों को नए संदर्भों में लागू करने की आवश्यकता है। यदि मानव समाज इन मूल्यों को अपनाता है, तो एक अधिक न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और संतुलित विश्व का निर्माण संभव है।

***सहायक आचार्य–राजनीति शास्त्र**
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय, दौसा (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रभु, आर. के. एण्ड राव, यू.आर., ''द माइंड ऑफ महात्मा गाँधी नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, 1967
2. अय्यर, राघवन, ''द मोरल एण्ड'', पॉलिटिकल थॉट ऑफ महात्मा–गाँधी,'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिली, 1973
3. नड्डा, बी.आर., ''गाँधी एण्ड गाँधीज्म ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1974
4. श्रीवास्तव, विजय ''लालची अर्थव्यवस्था के युग में हिन्द स्वराज की प्रासंगिकता,'' वर्ल्ड फोकस, जून 2012
5. चतुर्वेदी, अरुण एण्ड राजगरू, मनोज (संपादक), ''भारतीय लोकतंत्र और जन आंदोलन, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, 2015
6. अहमद, डॉ. सलीम का लेख ''21वीं सदी में महात्मा गाँधी की प्रासंगिकताः एक कर्मप्रधान व्यक्ति,'' वर्ल्ड फोकस, जुलाई 2017
7. शर्मा, महेश, ''राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी'' प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2018
8. ''परिक्षण का समयः वर्तमान में गांधीजी की प्रासंगिकता, वर्ल्ड फोकस, अंक–104, नवंबर 2020